मध्यकालीन भारतीय आर्य-भाषाओं के विकास में प्राकृत भाषा के योगदान पर प्रकाश डालें।

Ans— मध्यकालीन भारतीय आर्य-भाषा का समय 500 ई० पू० से 1000 ई० माना जाता है। मध्य भारतीय आर्य भाषा-काल को प्राकृत काल भी कहते हैं। इसके तीन स्पष्ट स्तर हैं — (क) प्रथम प्राकृत (500 ई० पू० से ई० सन् के आरम्भ तक) - पालि, अशोक के अभिलेख। (ख) द्वितीय प्राकृत (ई० सन् के आरम्भ से 500 ई० तक) साहित्यिक प्राकृतें। (ग) तृतीय प्राकृत (500 ई० से 1000 ई० तक) अपभ्रंश।

प्राकृत भाषा की उत्पत्ति को लेकर विद्वानों में मतभेद है। इस संबंध में तीन मत उपस्थित किये गये हैं—
(1) संस्कृत से प्राकृत की उत्पत्ति हुई है जैसा हेमचन्द्र ने कहा है 'प्रकृतिः संस्कृतम्। तत्र भवं तत आगतं वा प्राकृतम्।' अर्थात संस्कृत मूल है और उससे जो उत्पन्न हुई उसे प्राकृत कहते हैं। इस मत के अनुसार संस्कृत में रूप परिवर्तन होने से प्राकृत की उत्पत्ति हुई।
(2) दूसरा मत यह है कि प्राकृत का ही संस्कार कर संस्कृत का निर्माण हुआ। इसकी पुष्टि स्वयं संस्कृत शब्द से होती है जिसका संस्कार हुआ हो वह संस्कृत। इस मत के समर्थक कहते हैं- प्रकृत्या स्वाभाविकेन सिद्धम् प्राकृतम् अर्थात जो स्वभाव-सिद्ध हो वह प्राकृत है। तात्पर्य कि स्वाभाविक, सहज या साधारण भाषा प्राकृत है। जब तुलसीदास ने 'कीन्हें प्राकृत जन गुन गाना' कहा तो प्राकृत शब्द का प्रयोग साधारण के अर्थ में ही किया। (3) तीसरा मत यह है कि न तो संस्कृत से प्राकृत उत्पन्न हुई और न प्राकृत से संस्कृत। दोनों का पृथक्-पृथक् स्वतंत्र रूप में विकास हुआ। संस्कृत के समान्तर जो जन भाषाएँ थी, उन्हीं का विकसित रूप प्राकृतें हैं।

प्रथम प्राकृत के रूप में पालि का निर्देश हुआ है पालि शब्द का अर्थ क्या है और वह कहाँ की भाषा थी, इन दोनों प्रश्नों को लेकर ऐकमत्य नहीं है। पालि शब्द की निरुक्ति को लेकर अनेक कल्पनायें की गयी हैं—
(i) पंक्ति शब्द के निम्नलिखित विकास-क्रम से पालि की निष्पत्ति बतायी जाती है। पंक्ति > पंति > पंत्ति > पट्टि > पल्लि > पालि।

Scanned with CamScanner

(2) पल्लि (गाँव) से पालि को निष्पन्न बताया जाता है – पल्लि-भाषा अर्थात गाँव की भाषा। इस व्युत्पत्ति में भी कठिनाइयाँ हैं। एक तो यह कि ल का लोप और पूर्व स्वर का दीर्घत्व प्रायः प्राकृत काल की प्रवृत्ति के अनुकूल नहीं है। दूसरी यह कि सामान्यतः अन्तिम स्वर दीर्घ ही होना चाहिए था जिसके बदले पालि में ह्रस्व पाया जाता है। तीसरी यह कि पालि का प्रयोग केवल गाँव तक सीमित नहीं है यह तो बौद्ध धर्म के महनीय माध्यम के रूप में इस देश में ही नहीं विदेशों में भी युगों और शताब्दियों से विद्वानों के स्वाध्याय और सम्मान की वस्तु बनी है।

(3) प्राकृत > पाकट > पाअउ > पाअल > पाल > पालि। यह रूप परिवर्तन भी दूरारूढ़ है।

(4) एक विद्वान ने पाटलिपुत्र शब्द से पालि को व्युत्पन्न करने का प्रयास किया है। उनका कथन है कि ग्रीक में पाटलिपुत्र को पालिब्रोथ कहते हैं। निश्चय निश्चय ही पालिब्रोथ में पालि अंश किसी जनपदीय भाषा के आधार पर गृहीत हुआ होगा। परन्तु 'पाटलि' का विदेशियों द्वारा अपूर्ण उच्चारण ही पालिब्रोथ लिखने का कारण है। उसका संबंध पालि भाषा से स्थापित करना संगत नहीं।

प्राकृत लोक भाषा के रूप में फूलती-फलती रही किन्तु आज उन्हें जानने का आधार उनका साहित्यिक रूप ही है। वाचिक भाषा अस्थायी होती है। यह हम देख चुके हैं। किसी भी भाषा का रूप लिखित न रहने पर कालान्तर में उसका ज्ञान असम्भव हो जाता है।

Scanned with CamScanner